जगद्गुरुरामानन्दाचार्य–
राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः

प्रवृत्तिः

Pravritti : The Newsletter

वैशाखकृष्णचतुर्थी, विक्रमसंवत् २०८०, १० अप्रैल–२०२३

दीक्षान्तसमारोह-विशेषाङ्कः

Convocation - Special Edition

श्रीरामानन्दसम्प्रदायस्य महाविभूतयः

खोजीपीठाचार्याः ब्रह्मपीठाधीश्वराः श्रीसाकेतधाम्नि विराजमानाः पूज्यपादाः

स्वामिनः श्रीनारायणदासमहाराजाः

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताश्शक्ता अशक्ताः पदयोर्जगत्प्रभोः।
नापेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च न चापि कालो न हि शुद्धतापि वा।।

अनन्तानन्द, कबीर, रविदास, धन्ना, सैन,पीपा इत्यादि 12 शिष्यों के साथ विराजमान जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज

अनादि, वेदमूलक एवं सीतानाथ भगवान् श्रीराम द्वारा प्रवर्तित श्रीसम्प्रदाय अपने उदार सार्वभौम दृष्टिकोण से अतुलनीय व अनुपम है। भगवान् श्रीराम ने वेदविहित सभी मान्यताओं का पूर्णतः पालन करते हुए परमकल्याणमय वैदिक सनातन धर्म को सर्व–जनसुलभ बनाया तथा कौल–भील–किरात–निषाद तक पहुंचाया। परमात्मा श्रीरामजी ने साधनविहीनों को भवसागर से पार करने के लिए वेदों के सार–सर्वस्व भक्तिरूपी सेतु का निर्माण किया तथा उसको स्वयं प्रचारित–प्रसारित भी किया। उसी परमोदार भक्ति सेतु का जीर्णोद्धार मध्यकाल में जगद्गुरु स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज ने किया। जिसका संकेत भक्तचरित्र के सर्वश्रेष्ठ द्रष्टा व अनुपम गायक नाभादासजी ने भक्तमाल में किया है –

बहुत काल वपु धारिकै प्रणत जनन को पार दिय।
श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जग तरण किय।।

स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी ने जहाँ से अपने भक्ति आन्दोलन का शुभारम्भ किया, वह काशी का पञ्चगङ्गा घाट है। उस पर श्रीमठ है। श्रीमठ अनादि तथा परममङ्गलकारी निर्गुण व सगुण श्रीरामभक्ति परम्परा का एकमात्र मुख्यालय है। श्रीमठ में ही स्वामी रामानन्दजी ने अनन्तानन्द, रैदास, कबीर, धन्ना जाट, सेन नाई, पीपाजी एवं सुरसरि जैसे भक्तों को दिव्य आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया था। स्वामी रामानन्दजी महाराज के प्रशिष्यों में श्रीकृष्णदास 'पयोहारी', गोस्वामी श्रीतुलसीदास, श्रीकील्हदेव, श्रीअग्रदास, श्रीनाभादास, श्रीमीराबाई, श्रीबालानन्दजी, श्रीटीलाजी एवं श्रीकूबाजी इत्यादि आदित्य के समान भारतीय आध्यात्मिक गगन को आज भी आलोकित कर रहे हैं।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

संरक्षक

श्रीमान् कलराज मिश्र
माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति

श्रीमान् अशोक गहलोत
माननीय मुख्यमंत्री महोदय
राजस्थान

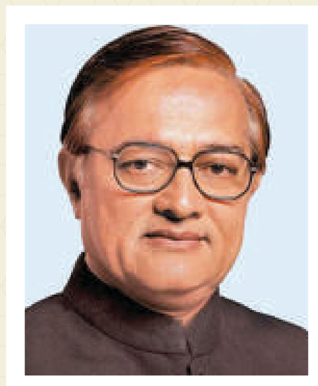

डॉ. बी.डी. कल्ला
माननीय संस्कृत शिक्षामंत्री
राजस्थान सरकार

श्रीमान् रामचरण बोहरा
माननीय सांसद - जयपुर

श्रीमती गंगा देवी
माननीया विधायक - बगरू

सत्यमेव जयते

कलराज मिश्र

राज्यपाल, राजस्थान

संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में सम्पादित विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों को चिरस्थायी बनाने हेतु 'प्रवृत्ति' पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है।

संस्कृत साहित्य में सत्य, अहिंसा, देशप्रेम और विश्वबन्धुत्व आदि जीवन मूल्यों का विशद वर्णन है। इन सबके भीतर हमारे शास्त्र हमें जिस महत्त्वपूर्ण मूल्य की ओर प्रवृत्त करते हैं, वह है - कर्त्तव्यपरायणता। अन्तःप्रेरणा से ही कर्मवीर होकर अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहना ईश्वर की उपासना है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार अकर्मण्य होना पाप है, दुःख का कारण है। इसीलिए ऐतरेयब्राह्मण में कहा गया है -

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्।।

सोता हुआ निष्क्रिय व्यक्ति कलियुग है, जागृत व्यक्ति द्वापर है, उठा हुआ अर्थात् कार्य के लिए उद्यत व्यक्ति त्रेता है और कर्मपथ पर सतत चलता हुआ व्यक्ति सतयुग है। अतः ज्ञान एवं सेवा के पथ पर सतत चलते रहने का आदेश ही वेद-पुराण देते हैं।

मैं पत्रिका के साफल्य हेतु मंगलकामना करता हूँ।

कलराज मिश्र

(कलराज मिश्र)

सत्यमेव जयते

अशोक गहलोत

मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार

संदेश

भारत में जितनी संस्कृतियां जन्मी और पली-बढ़ी, संस्कृत उनकी आधार भाषा है। संस्कृत का दायरा किसी पंथ, परंपरा या विधान का अनुगामी नहीं है, यह सार्वभौम तथा सार्वकालिक है। इसी नाते 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसे अमर वाक्य का सिद्धांत सारे धर्मों, पंथों और परम्पराओं को स्वीकृत है। वेद-पुराण और रामायण-महाभारत के श्लोक सनातन परंपरा के वाहक हैं, जो आज भी सारी मानव जाति को प्रेरित करते हैं।

आजादी के बाद 1956 में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संस्कृत आयोग बनाया, जिसके अध्यक्ष जाने-माने भाषाविज्ञानी डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी थे। इस आयोग कि सिफारिश पर केंद्र सरकार ने तीन संस्कृत शिक्षण संस्थान स्थापित किए। परंपरागत संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में स्थापित किए गए। प्रदेश में संस्कृत शिक्षा के व्यापक प्रसार हेतु राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय को आरम्भ करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, जब 06 फरवरी, 2001 को विश्वविद्यालय ने जयपुर में विधिवत् कार्य करना शुरू किया।

मैं जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की अहर्निश समुन्नति हेतु शुभकामना करता हूँ और 'प्रवृत्ति' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अशोक गहलोत)

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला

मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक), संस्कृत शिक्षा,
प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ),
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
राजस्थान सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की समाचार पत्रिका 'प्रवृत्ति' का प्रकाशन हो रहा है।

भारतीय संस्कृति की स्रोतभाषा संस्कृत देश को भाषाई तथा सामाजिक एकता में पिरोने का मजबूत सूत्र है। भारतीय एवं अनेक विदेशी भाषाएं संस्कृत का आस-पड़ोस है। इसमें तकनीकी, गणित, विज्ञान और प्रबंधन के महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। यह सिर्फ पूजा-पाठ और कर्मकांड तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें आयुर्वेद, गणितीय प्रणाली, संगीत, शिल्पशास्त्र, वास्तु शास्त्र, कृषि शास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोल विज्ञान, चिकित्सा एवं योग समेत कई विधाएं हैं, जो मानव समाज के लिए बहुत उपयोगी हैं। यह ज्ञान-विज्ञान की उत्स है, जिसमें दर्शन, अध्यात्म और मानवतावादी साहित्य का खजाना है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु स्वस्ति-कामना करता हूँ। **शुभं भूयात्...**

(डॉ. बी.डी. कल्ला)

प्रोफेसर डॉ. रामसेवक दुबे

कुलपतिः
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः
जयपुरम्

शुभाशंसा

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानव: ।।

वर्तत इह जगति सर्वार्थसिद्धये जगत्कारणभूते परमात्मनि मनुष्याणां स्वकर्म समभ्यर्चनाया उपदेश: श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषदि। एवमेव लोकोपकारार्थं स्वकर्म -समभ्यर्चनोपदेश: श्रूयते ईशोपनिषदि परमकल्याणाय मनुष्याणाम् - **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।** इत्थमेव विश्वविद्यालयाद्वयं यस्मादधीता: सुशिक्षिता: सुखिनो यशस्विनोऽपि सम्भूता: तस्य कृतेऽपि अस्माकं स्व-स्व नियतकर्मसमभ्यचर्ना विहितास्तीति । नात्र काचिच्छंकाकलंकपकावकाश: - **स्वे-स्वे कर्मण्यभिरत: संसिद्धिं लभते नर: ।**

अस्तु यथा सर्वाणि विधिप्रतिषेधमोक्षपराणि शास्त्राणि प्रवृत्तिनिवृत्तिभूतानां सर्वेषां कर्मणां विषये बहुविधा: विचारा: प्रकुर्वन्ति तथैवाखिलभारतदेशालङ्कारभूतस्य जयपुरस्थस्य जगद्गुरु-रामानन्दाचार्य-राजस्थान-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य प्रवृत्ति: इति संज्ञाविभूषितेयं पत्रिका विश्वविद्यालयस्यास्य सर्वा: वार्ता: स्वात्मनि निधाय प्रकाशते एवञ्च सर्वथार्थतीभूताया: प्रवृत्ति: इति वार्तापत्रिकाया: प्रकाशनस्य विषये विज्ञाय साफल्यं चास्या: शुभं च कामयमानो मनो मे अतीवमोमुद्यते ।

संस्कृतविश्वविद्यालयस्याशेषवृत्तान्तस्य प्रचाराय प्राङ्गणेऽस्मिन् जायमानानां समेषां कार्यकलापानां लोकविज्ञापनाय अस्य चोज्ज्वलकीर्तिप्रसाराय दिक्षु सर्वासु सफलेयं प्रवृत्ति: भूयादिति भावयामि। अस्या: सम्पादनकार्येषु अहर्निशं सन्नद्धानां सम्पादकानामस्माकं स्नेहभाजानां विद्वतल्लजानां शास्त्रिकोसलेन्द्रदासानां तथा च सम्पादकमण्डलस्य सदस्यानां कृते भूयांसि धन्यवचांसि व्याहरामि । परमपूज्याभिपूज्यानां ब्रह्म-पीठाधीश्वर-श्री१००८-नारायणदासमहाराजानां शुभसंकल्पनासम्प्राप्तये चाहं सततं कामये ।

(प्रोफेसर डॉ. रामसेवक दुबे)

प्रवृत्तिः Pravritti The Newsletter

संरक्षकः
प्रोफेसर डॉ. रामसेवक दुबे
कुलपतिः

सम्पादकः
शास्त्री कोसलेन्द्रदास
दर्शन-विभागाध्यक्षः

सम्पादकमण्डलम्
डॉ. विनोदकुमारशर्मा
डॉ. राजधरमिश्रः
डॉ. माताप्रसादशर्मा
डॉ. मधुबालाशर्मा
डॉ. देवेन्द्रकुमारशर्मा

प्रबन्धसंपादकः
डॉ. राजधरमिश्रः
कुलसचिवः (कार्यवाहकः)

शास्त्री कोसलेन्द्रदासः

सम्पादकीयम्

'रुहो रुरोह रोहितः' इति अथर्ववेदस्थमाभाणकं प्रशंसति प्रयत्नशीलान्। प्रयत्नस्य महत्त्वं सर्वदा अतुलनीयमस्ति। ऐश्वर्यं प्राप्तुकामाः नवकार्याणि कर्तुं प्रयतन्ते। ऋग्वेदवाक्यमस्ति खलु अतितरां प्रेरणादायकम् **'मूर्धानं राय आरभे'** इति। विश्वविद्यालयोऽयं निरन्तरं नूतनकर्माणि विदधाति, देशे विदेशे सर्वत्रापि संस्कृतसंरक्षणबोधात्मकशास्त्रपरम्परा परिपालनात्मकसंस्कृतप्रचारात्मककार्याणि जायेरन् इत्येतदर्थम् अहर्निशं सामकालिक-नूतनकार्याणां बाहुल्येन करणस्यावश्यकता दृश्यते। तत्रापि महत्त्वपूर्णो विषयो भवति युवानः छात्राः आचार्याः विद्वांसश्च कार्यतत्पराः शास्त्रबोधनसामर्थ्यसम्पृक्ताः साधुसंस्कृतलेखनतत्पराश्च जायेरन् इति। यद्यपि कार्यपरकता दृश्यत एव तथापि जनजागरणदृष्टिरुत्पादनीया। विश्वविद्यालयीयमिदं प्रवृत्तिनामकं वार्तापत्रं सर्वं विवरणं विदाधाति अपरत्र असम्पृक्तकार्याणां प्रेरणायै महत्वपूर्णं साधनं भविष्यति।

विश्वविद्यालययोजनानां परिचायनं सर्वेषां जायेत इत्यपि महत्वपूर्णं तदर्थं निरन्तरता नियमितता च भवेदिति। यद्यपि विश्वविद्यालये विगतेषु दिवसेषु यावन्ति कार्याणि अभवन् तेषां प्रतिवेदनं देयमासीत् किन्तु कानिचिदेव लब्धानि येषामत्र सङ्कलनमस्ति। अवशिष्टानाम् आगामिनि अङ्के यत्नो भविष्यति।

सम्पूर्णं विश्वं संस्कृतं प्रति आत्मविकासदृष्ट्या पश्यति, वैदेशिकाः अपि संस्कृताध्ययनाय सदा भारतोन्मुखाः दरीदृश्यन्ते भारतीयं कीदृशं वा विज्ञानं भवतु, जनानां बाहुल्येन ईहा वर्तते योगं संस्कृतं च प्रति, किन्तु परिवेशनिर्माणस्यावश्यकता दरीदृश्यते। देशे शास्त्रात्मकं प्रचारात्मकं च वातावरणं निर्मितं भवेच्चेदवश्यं सम्पूर्णविश्वस्मिन् पुनरेकवारं भारतकीर्तिः विद्योतेत । तत्र हि एकीभूय प्रयत्नारम्भस्य च विधानं कर्तव्यमेव। छात्रेषु आचार्येषु च अध्ययनस्वभावः यथोत्पद्येत तथा प्रयत्नः नैरन्तर्येण कर्तव्यः। सर्वदा संस्कृतज्ञैः अतिरिक्तकालं स्वीकृत्य अध्ययनाध्यापनारम्भः कार्य इति। विश्वविद्यालयीयं कार्यं निरन्तरं वर्धेत इति प्रार्थनापूर्वकम् अनाथनाथं श्रीमज्जानकीनाथं प्रणम्य विरमामीति शम्।

(शास्त्री कोसलेन्द्रदासः)
सम्पादकः

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति

संस्थापक कुलपति

पद्मश्री स्वर्गीय प्रो. मण्डन मिश्र

(06.02.01 से 15.11.01)

2. श्री एस.एन. थानवी, IAS (कार्यवाहक)	19.11.01 से 22.01.02
3. श्री विनोद जुत्शी, IAS (कार्यवाहक)	22.01.02 से 30.05.02
4. प्रो. सत्यदेव मिश्र	31.05.02 से 30.05.05
5. प्रो. के.वी. रामकृष्णमाचार्युलु	30.05.05 से 30.05.08
6. श्री तपेन्द्र कुमार, IAS (कार्यवाहक)	30.05.08 से 12.08.08
7. श्री अशोक शेखर, IAS (कार्यवाहक)	12.08.08 से 11.09.08
8. प्रो. युगलकिशोर मिश्र	11.09.08 से 18.06.10
9. श्रीमती किरण सोनी गुप्ता, IAS (कार्यवाहक)	18.06.10 से 01.10.10
10. श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन, IAS (कार्यवाहक)	01.10.10 से 14.02.11
11. श्री उमराव सालोदिया, IAS (कार्यवाहक)	14.02.11 से 28.04.11
12. प्रो. रामानुज देवनाथन	28.04.11 से 27.04.14
13. श्री मधुकर गुप्ता, IAS (कार्यवाहक)	27.4.14 से 11.08.14
14. श्री मंजीत सिंह, IAS (कार्यवाहक)	11.08.14 से 03.11.14
15. श्री हनुमान सिंह भाटी, IAS (कार्यवाहक)	03.11.14 से 14.02.15
16. प्रो. विनोद कुमार शर्मा	14.02.15 से 13.02.18
17. प्रो. आर.के. कोठारी (कार्यवाहक)	14.02.18 से 23.08.19
18. डॉ. अनुला मौर्य	23.08.19 से 22.08.22
19. प्रो. सुधी राजीव (कार्यवाहक)	22.08.22 से 03.10.22
20. प्रो. रामसेवक दुबे	03.10.22 से निरन्तर

विश्वविद्यालय कार्यपरिषद्

प्रो. रामसेवक दुबे
माननीय अध्यक्ष

श्री राजेन्द्र पारीक
विधायक
सदस्य

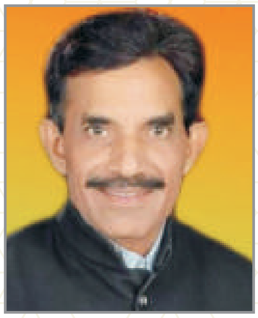

श्री लक्ष्मण मीणा
विधायक
सदस्य

प्रो. केशरीनन्दन मिश्र
राज्यपाल प्रतिनिधि
सदस्य

प्रो. रामकिशोर शास्त्री
राज्य सरकार प्रतिनिधि
सदस्य

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा
शिक्षक प्रतिनिधि
सदस्य

श्री सुनील शर्मा (IAS)
आयुक्त, कॉलेज शिक्षा
पदेन सदस्य

प्रो. भास्कर शर्मा
निदेशक, संस्कृत शिक्षा
पदेन सदस्य

डॉ. माताप्रसाद शर्मा
कुलपति नामित
संकायाध्यक्ष सदस्य

डॉ. राजधर मिश्र
कुलसचिव (कार्यवाहक)
पदेन सदस्य सचिव

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय अपरा-काशी के रूप में विख्यात जयपुर में ग्राम मदाऊ में स्थित है। राजस्थान विधानसभा द्वारा पारित 'राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक-1998' के अनुसरण में 6 फरवरी, 2001 को विश्वविद्यालय का शुभारम्भ हुआ। ब्रह्मपीठाधीश्वर पद्मश्रीविभूषित श्रीनारायणदासजी महाराज, त्रिवेणीधाम के सत्प्रयास एवं प्रेरणा से विश्वविद्यालय के विशालतम परिसर में विभिन्न भवनों एवं विभागों का निर्माण हुआ, जिसका शिलान्यास माननीय श्री अंशुमान सिंह, राज्यपाल-राजस्थान और माननीय श्री अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री-राजस्थान ने 17 अप्रेल, 2003 को किया। इस विशाल परिसर का उद्घाटन 14 सितम्बर, 2005 को भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत एवं श्रीमती वसुंधरा राजे, माननीया मुख्यमंत्री-राजस्थान के करकमलों से हुआ।

विश्वविद्यालय 311 बीघा (78.85 हैक्टेयर) भूमि में सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में निर्मित है, जहां प्रशासनिक भवन, अनुसंधान केन्द्र, पुस्तकालय, सेमीनार हॉल, ऑपन एयर थियेटर, राजस्थान मंत्र प्रतिष्ठान, तुलसी सभागार सहित दर्शन, व्याकरण, शिक्षा, वेद, ज्योतिष, साहित्य, योग विभाग, अतिथिगृह, कर्मचारी आवास, मीरा बालिका छात्रावास, बालक छात्रावास, वार्डन आवास, चिकित्सालय, बैंक, पोस्ट ऑफिस, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, केन्टीन, श्रीविद्यावारिधि हनुमन्मन्दिर एवं संत निवास हैं। विश्वविद्यालय संस्कृत भाषा और शास्त्र परम्परा के अध्ययन एवं शोध हेतु विश्वस्तरीय उच्च शिक्षण संस्थान है। विश्वविद्यालय से सम्पूर्ण राजस्थान में शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शास्त्री तथा योग महाविद्यालय सम्बद्ध हैं।

विश्वविद्यालय-वैभवम्

सनातन ज्ञान की वाहक है संस्कृत : राज्यपाल

विश्वविद्यालय का चतुर्थ ऑनलाइन दीक्षांत समारोह

19 जनवरी, 2022 को जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय का चतुर्थ दीक्षांत ऑनलाइन माध्यम से हुआ। समारोह में माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने संस्कृत भाषा से आम लोगों को जोड़ने के लिए प्रयास करने पर बल दिया है। संस्कृत के पुरातन ग्रंथों का हिन्दी और दूसरी भाषाओं में बड़े स्तर पर अनुवाद आवश्यक है। राज्यपाल ने इस अवसर पर कहा कि आधुनिक विषयों को संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। उन्होंने संस्कृत विश्वविद्यालय को भारतीय जीवन दर्शन से जुड़े मौलिक शोध और अनुसंधान का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने का आह्वान किया।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय संस्कृत शिक्षा मंत्री डॉ. बीडी कल्ला ने कहा कि संस्कृत भाषा के प्रसार को लेकर राज्य सरकार सतत प्रयत्नशील है। संस्कृत शिक्षा और संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ही प्रदेश में अलग से संस्कृत शिक्षा निदेशालय और संस्कृत अकादमी का संचालन किया जा रहा है।

तत्कालीन कुलपति डॉ. अनुला मौर्य एवं कुलसचिव श्रीमती रंजीता गौतम (आरएएस) समारोह में उपस्थित रहीं। समारोह में शैक्षणिक सत्र 2019 एवं 2020 के 16851 विद्यार्थियों को डिग्रियां एवं 23 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि तथा सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 31 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। मंगलाचरण डॉ. शंभुकुमार झा और संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया।

भारत की संस्कृति कृषि और ऋषि की : प्रो. रामानुज उपाध्याय

भारत की वैदिक संस्कृति के आधार ऋषि और कृषि हैं। यही कारण रहा है कि संस्कृति के आधार राम ऋषियों के द्वारा किए यज्ञ से जन्म लेते हैं और माता सीता का जन्म कृषि के लिए हल जोतते वक्त होता है। यह बात 11 फरवरी, 2022 को श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. रामानुज उपाध्याय ने राजस्थान मंत्र प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित व्याख्यान समारोह में कही। जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के समिति कक्ष में हुए कार्यक्रम में प्रो. उपाध्याय ने कहा कि वेद मंत्रों का प्रायोगिक पक्ष समाज के लिए उपयोगी है। आज वेदों के निहित विज्ञान से मनुष्य के संस्कार, स्वास्थ्य और अध्यात्म को जोड़ने की आवश्यकता है। प्रतिष्ठान के तत्कालीन निदेशक डॉ. नारायण होसमने ने वैदिक मंत्रों पर शोध की जरूरत बताई। इस अवसर पर डॉ. माताप्रसाद शर्मा, डॉ. कैलाश शर्मा, डॉ. राजधर मिश्र, शास्त्री कोसलेंद्रदास और डॉ. कुलदीप सिंह पालावत सहित अनेक शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

यह काफी नहीं, मैं औरत हूं..!

आकाशवाणी के सहयोग से विश्वविद्यालय में सर्वभाषा कवि सम्मेलन

परिचय की मोहताज नहीं हूं, क्यूं? यह काफी नहीं मैं औरत हूं...कविता से अजमेर की श्रीमती शीलू तन्हा ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रस्तुत किया। राजस्थानी के वरिष्ठ कवि श्री चंद्रप्रकाश देवल की अध्यक्षता में हुए सर्वभाषा कवि सम्मेलन में कवियों ने महिला स्वतंत्रता और उनकी मौजूदा स्थिति पर काव्य पाठ किया।

आजादी के अमृत महोत्सव व महिला दिवस के उपलक्ष्य पर 07 मार्च, 2022 को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में सर्वभाषा कवि सम्मेलन आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर के सहयोग से हुआ। आकाशवाणी के उप महानिदेशक श्री मयंक कुमार एवं कार्यक्रम प्रमुख श्री रामकरण मीणा ने भाषाओं को मजबूत बनाए रखने के लिए कवि सम्मेलनों की आवश्यकता बताई। सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए माननीया कुलपति डॉ. अनुला मौर्य ने कहा कि बाजारीकरण के इस दौर में कवि सम्मेलन प्रासंगिक हैं और लोगों के लिए आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं, जिनसे मनोरंजन के साथ ही ज्ञानार्जन भी होता है। कविताएँ भारतीय संस्कृति और चेतना की एक अभिन्न अंग हैं।

सम्मेलन में राजस्थानी भाषा के चंद्रप्रकाश देवल, संस्कृत के प्रो. रामकुमार शर्मा, हिंदी के श्री किशोर कुमार पारीक और श्रीमती अंशु हर्ष, सिंधी की श्रीमती शीलू तन्हा एवं उर्दू की श्रीमती मल्का नसीम ने काव्य पाठ किया।

विश्वविद्यालय के गोस्वामी तुलसीदास सभागार में हुए सम्मेलन का मंच संचालन श्रीमती बीना चतुर्वेदी एवं संयोजन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया। सम्मेलन में कुलसचिव श्रीमती रंजीता गौतम (आरएएस) उपस्थित रहीं।

लोकतंत्र के केंद्र में है बंधुभाव : प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल

'भारतीय लोकतंत्र और अंबेडकर' पर व्याख्यान

लोकतंत्र में व्यक्त बंधुता का तात्पर्य सभी धर्मों के लोगों में आपसी बंधुभाव बनाए रखने से है। लेकिन मौजूदा वक्त में लोगों को धर्म के नाम पर आपस में लड़ाकर सामाजिक बंधुता पर संकट खड़े किए जा रहे हैं। डॉ. भीमराव अंबेडकर का मानना था कि लोकतंत्र का आधार विविधता में एकता से है और यह एकता धार्मिक मामलों में नहीं बल्कि सामाजिक स्तर पर है। यह बात 12 अप्रैल, 2022 को प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में कही। संघ लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य प्रो. अग्रवाल ने कहा कि सामाजिक सुधार का आंदोलन स्वामी रामानंद ने चलाया था। उनके नाम से स्थापित विश्वविद्यालय में अंबेडकर पर चर्चा होनी ही चाहिए।

अंबेडकर अध्ययन केंद्र की ओर से हुए समारोह की अध्यक्षता करते हुए माननीया कुलपति डॉ. अनुला मौर्य ने कहा कि जब तक पूंजीवाद कायम है तब तक सही मायनों में न स्वतंत्रता संभव है और न समानता। लोकतंत्र को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए वे सारी चीजें खत्म करनी है, जिनसे असमानता पैदा होती है। कुलसचिव श्रीमती रंजीता गौतम ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया।

संस्कृत में प्रभावी अनुसंधान की जरूरत : प्रो. रमेश भारद्वाज

संस्कृत विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्यशाला

भारतीय संस्कृति की स्रोतभाषा संस्कृत सिर्फ पूजा-पाठ और कर्मकांड तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आयुर्वेद, गणितीय प्रणाली, संगीत, शिल्प शास्त्र, वास्तु शास्त्र, कृषि शास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोल विज्ञान, चिकित्सा एवं योग समेत कई विधाएं हैं, जिन पर शोध की दरकार है। यह बात 21 अप्रैल, 2022 को हरियाणा के महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज ने कही।

वे जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में अनुसंधान प्रविधि कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पुरातन शास्त्रों में दर्शन, अध्यात्म और मानवतावादी साहित्य का खजाना है। भारत में जितनी संस्कृतियां जन्मीं और पलीं-बढ़ीं, संस्कृत उनकी आधार भाषा है। संस्कृत का दायरा किसी पंथ, परंपरा या विधान का अनुगामी नहीं है, यह सार्वभौम तथा सार्वकालिक है। इसी नाते 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमो धर्म' जैसे अमर वाक्य का सिद्धांत सारे धर्मों, पंथों और परंपराओं को स्वीकृत है।

विश्वविद्यालय में शुरू हुई 7 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए माननीया कुलपति डॉ. अनुला मौर्य ने संस्कृत में प्रभावी अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया। आर्मीनिया की नायरा मकर्चयन ने संस्कृत में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध करने की जरूरत बताई। कुलसचिव श्रीमती रंजीता गौतम ने विश्वविद्यालय में शोधार्थियों के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाने की बात कही। अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. माताप्रसाद शर्मा ने कार्यशाला का ब्यौरा प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. कुलदीप सिंह पालावत ने किया।

'भारतीय दर्शन की उपयोगिता'

प्रोफेसर जटाशंकर त्रिपाठी के विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

2 फरवरी, 2023 को विश्वविद्यालय के समिति कक्ष में दर्शनशास्त्र के जाने-माने विद्वान् प्रोफेसर जटाशंकर त्रिपाठी के विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर त्रिपाठी ने **'भारतीय दर्शन की उपयोगिता'** विषय पर व्याख्यान प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर रामसेवक दुबे की। संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया।

संस्कृत शास्त्रों पर शोध की जरूरत : प्रो. हरेकृष्ण शतपथी

संस्कृत विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्यशाला का समापन

संस्कृत में गहन शोध की अति आवश्यकता है। नवीन शोध रोजगार के माध्यम हो सकते हैं। सरकारी विभागों के साथ ही निजी क्षेत्र भी संस्कृत स्नातकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएं, यह समय की मांग है। यह बात 27 अप्रैल, 2022 को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के पूर्व कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने कही। वे जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अनुसंधान प्रविधि कार्यशाला के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्य वक्ता मेजर सुरेंद्र नारायण माथुर ने कहा कि यदि हम संस्कृत को जीवित रखना चाहते हैं तो उसका प्रयोग भाषा की तरह नहीं, बल्कि उपकरण के रूप में करना होगा। पूरे विश्व में सनातन संस्कृति का मान बढ़ रहा है। जब भारतीय संस्कृति की बात होती है तो उसकी आधार भाषा के रूप में संस्कृत के उत्थान की चर्चा जरूर होनी चाहिए। अध्यक्षता करते हुए माननीया कुलपति डॉ. अनुला मौर्य ने कहा कि संस्कृत भाषा के व्यावहारिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने होंगे। संस्कृत को आधुनिक विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए। बहुविषयी अध्ययन व शोध कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. माताप्रसाद शर्मा ने बताया कि सात दिनों तक चली कार्यशाला में देश भर से 327 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संदीप जोशी ने किया।

संस्कृत विश्वविद्यालय में पंकज कुमावत छात्रसंघ अध्यक्ष

शांतिपूर्ण मतदान हुआ संपन्न

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में हुए छात्रसंघ चुनाव शांतिपूर्वक संपन्न हुए। मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने बताया कि अध्यक्ष पद पर पंकज कुमावत ने चुनाव जीता। उपाध्यक्ष पद पर दीपांशु नाथावत, महासचिव पद पर मनोज सिंह सैन और संयुक्त सचिव पद पर प्रदीप भदाला विजयी रहे। शोधछात्र प्रतिनिधि पद पर आशुतोष शर्मा निर्विरोध विजयी रहे। कार्यवाहक कुलपति डॉ. सुधी राजीव ने निर्वाचित सदस्यों को शपथ दिलवाई।

शास्त्री कोसलेंद्रदास बने योग विभाग के अध्यक्ष

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने 14/02/2023 को कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे के निर्देश से एक आदेश जारी कर महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेंद्रदास) को योग विभाग के अध्यक्ष पद का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा बने वेद वेदांग संकाय के अध्यक्ष

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में वेद-वेदांग संकाय के अध्यक्ष पद का कार्यभार 01 फरवरी, 2023 को डॉ. विनोद कुमार शर्मा को दिया गया है। ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष डॉ. शर्मा को संस्कृत भाषा के प्रसार और अध्यापन में की गई उपलब्धियों के लिए राष्ट्रपति से सम्मान प्राप्त किया है।

दुर्गेश राजोरिया बने वित्त नियंत्रक

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में श्री दुर्गेश राजोरिया ने वित्त नियंत्रक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। राज्य लेखा सेवा के अधिकारी श्री राजोरिया अक्टूबर, 2022 से विश्व-विद्यालय में कार्यरत हैं।

प्रो. रामसेवक दुबे ने संभाला
विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्यभार

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पद का कार्यभार 03 अक्टूबर, 2022 को प्रो. रामसेवक दुबे ने संभाला। कार्यवाहक कुलपति प्रो. सुधी राजीव ने उन्हें कार्यभार ग्रहण करवाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने वैदिक मंत्रों के साथ नवनियुक्त कुलपति का स्वागत किया।

प्रो. दुबे ने कहा कि संस्कृत विश्वविद्यालय को संस्कृत शिक्षा के अध्ययन और अध्यापन का सर्वोत्तम केंद्र बनाना उनकी प्राथमिकता रहेगी। परीक्षाओं का समय पर आयोजन और पुरातन ग्रंथों मे निबद्ध रहस्यों पर शोधकार्य को गति देने का कार्य किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. माताप्रसाद शर्मा, शास्त्री कोसलेंद्रदास, डॉ. जेएन विजय सहित अन्य शिक्षक एवं कार्मिक उपस्थित थे।

आध्यात्मिक जगत के सूर्य हैं रामानन्दाचार्य : प्रो. रामसेवक दुबे

रामानन्दाचार्य जयन्ती पर आयोजन

वैचारिक विशालता एवं उदारता की ओर संसार का चित्त आकृष्ट करने के लिए सात शताब्दियों पहले चले भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी रामानंदाचार्य हैं। उन्होंने धार्मिक विश्वासों एवं पूजा-उपासना के प्रति आम लोगों के मन में भक्ति की अलख जगाई, जिसमें जाति—पांति का कोई भेद नहीं था। यह बात 14 जनवरी, 2023 को जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने कही। वे रामानंदाचार्य जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उनकी शिष्य परंपरा में महात्मा अनंतानंद, कबीर, रविदास, धन्ना भक्त, सैना और महाराज पीपा जैसी अनेक विभूतियां हुई हैं, जो आज भी भारत के आध्यात्मिक जगत को प्रकाशित कर रही है।

इससे पूर्व वेद विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा ने वैदिक एवं पौराणिक विधि से पूजा और यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर शैक्षणिक परिसर निदेशक डॉ. विनोद कुमार शर्मा और अनुसंधान केंद्र निदेशक डॉ. माताप्रसाद शर्मा सहित शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित रहे। व्याकरण विभाग के सहायक आचार्य डॉ. दयारामदास ने सपत्नीक यज्ञ एवं पूजा सम्पन्न की।

तीन विभागों में नए अध्यक्ष

डॉ. मधुबाला शर्मा
साहित्य विभाग

महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेन्द्रदास)
दर्शन विभाग

डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा
वेद एवं पौरोहित्य विभाग

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में 28 दिसंबर, 2022 को तीन विभागों के अध्यक्ष बदले गए। माननीय कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे के निर्देश से जारी आदेश के अनुसार महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेंद्रदास) को दर्शन विभाग और डॉ. देवेंद्रकुमार को वेद एवं पौरोहित्य विभाग तथा डॉ. मधुबाला शर्मा को साहित्य विभाग की अध्यक्ष बनाया गया है।

भारतीयों की प्राणभाषा है संस्कृत - राज्यपाल

योगसाधना भवन का लोकार्पण व संविधान पार्क और नवग्रह-नक्षत्र वाटिका का शिलान्यास

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने नई पीढ़ी को आधुनिक जीवन शैली से जुड़े दुष्प्रभावों से बचाने के लिए यौगिक दिनचर्या से जोड़ने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि योग आत्मविकास का सबसे बड़ा माध्यम है, भौतिकता के दौर में मानसिक शांति एवं संतोष के लिए योग सर्वथा उपयोगी है। राज्यपाल 10 दिसम्बर, 2022 को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच शिलापट्टिकाओं का अनावरण कर योग साधना भवन का लोकार्पण और संविधान पार्क एवं वैज्ञानिक आधार पर तैयार करवाई जा रही नवग्रह-नक्षत्र वाटिका का शिलान्यास किया।राज्यपाल ने कहा कि योग साधना भवन को योग के शास्त्रीय अध्ययन केन्द्र के रूप में विकसित करने का आह्वान किया, जहां योग से जुड़े शास्त्रों और योग की महान धरोहर से जुड़े आधुनिक ज्ञान को संस्कृत से अनुदित कर हिंदी और दूसरी भाषाओं में उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने यहां आधुनिक संदर्भों में योग संस्कृति से जुड़े व्याख्यान आयोजित किए जाने का सुझाव दिया।राज्यपाल ने कहा कि संस्कृत हमारे देश की गौरवमयी संस्कृति और भारतीयता के मूल से जुड़ी भाषा है। उन्होंने कहा कि विश्वभर के ज्ञान-विज्ञान और दर्शन का महत्वपूर्ण और सूक्ष्म ज्ञान संस्कृत में ही उपलब्ध है। उन्होंने संस्कृत भाषा के आधुनिक विकास के लिए सभी से मिलकर कार्य करने की आवश्यकता जताई। संस्कृत शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने कहा कि विश्व में भारत देश की प्रतिष्ठा संस्कृत और हमारी संस्कृति से ही है। राजस्थान में संस्कृत भाषा के उन्नयन के लिए राज्य सरकार व्यापक स्तर पर प्रयास कर रही है। कल्ला ने विश्वविद्यालय में प्रवेशिका विद्यालय खोलने की घोषणा की। सांसद श्री रामचरण बोहरा ने विश्वविद्यालय में सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के लिए सांसद निधि से पचास लाख रुपए देने की घोषणा की। बोहरा ने संस्कृत विश्वविद्यालय में भर्तियां करने की जरूरत पर जोर दिया। बगरू विधायक श्रीमती गंगादेवी ने विश्वविद्यालय परिसर की चारदीवारी के निर्माण के लिए विधायक निधि से बीस लाख रुपए की राशि प्रदान करने की घोषणा की। त्रिवेणी के श्री रामरिछपालदास महाराज ने कर्म के महत्व और राजधर्म के बारे में बताया।कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में बताते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में बनने जा रही नवग्रह-नक्षत्र वाटिका, नक्षत्र शाला, वेध शाला और यज्ञ शाला से परिपूर्ण विश्व की अपनी तरह की अनूठी वाटिका होगी। कार्यक्रम के आरंभ में राज्यपाल ने उपस्थित लोगों को संविधान की उद्देशिका और मूल कर्तव्यों का वाचन करवाया। उन्होंने नवग्रह-नक्षत्र वाटिका की पुस्तक का लोकार्पण भी किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यवाहक कुलसचिव श्री दुर्गेश राजोरिया और संचालन शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया।

नवग्रह-नक्षत्र वाटिका

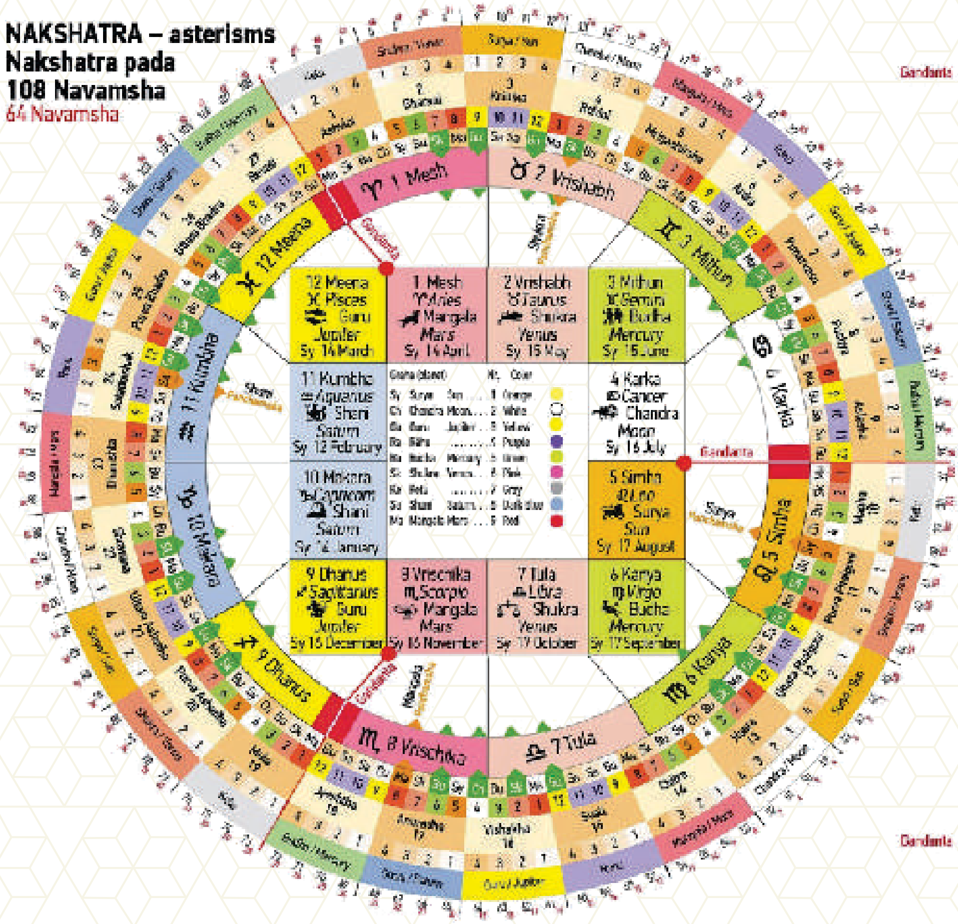

Nakshatra Ruler

# Nakshatra	Asterisms	Graha	
Gandanta			
1. Ashwini	Mesh - Aries 00°00'-13°20'	Ketu	Ke
2. Bharani	Mesh - Aries 13°20'-26°40'	Shukra Venus	Sk
3. Krittika	Mesh 26°40' Ikb Vrishabh 10°00'	Surya Sun	Sy
4. Rohini	Vrishabh - Taurus 10°00'-23°20'	Chandra Moon	Ch
5. Mrigashirsha	Vrishabh 23°20' Ikb Mithun 06°40'	Mangala Mars	Ma
6. Ardra	Mithun - Gemini 06°40'-20°00'	Rahu	Ra
7. Punarvasu	Mithun 20°00' Ikb Karka 03°20'	Guru Jupiter	Gu
8. Pushya	Karka - Cancer 03°20'-16°40'	Shani Saturn	Sa
9. Ashlesha	Karka - Cancer 16°40'-30°00'	Budha Mercury	Bu
10. Magha	Simha - Leo 00°00'-13°20'	Ketu	Ke
11. Purva Phalguni	Simha - Leo 13°20'-26°40'	Shukra Venus	Sk
12. Uttara Phalguni	Simha 26°40' Ikb Kanya 10°00'	Surya Sun	Sy
13. Hasta	Kanya - Virgo 10°00'-23°20'	Chandra Moon	Ch
14. Chitra	Kanya 23°20' Ikb Tula 06°40'	Mangala Mars	Ma
15. Swati	Tula - Libra 06°40'-20°00'	Rahu	Ra
16. Vishakha	Tula 20°00' Ikb Vrischika 03°20'	Guru Jupiter	Gu
17. Anuradha	Vrischika - Scorpio 03°20'-16°40'	Shani Saturn	Sa
18. Jyeshtha	Vrischika - Scorpio 16°40'-30°00'	Budha Mercury	Bu
19. Mula	Dhanus - Sagittarius 00°00'-13°20'	Ketu	Ke
20. Purva Ashadha	Dhanus - Sagittarius 13°20'-26°40'	Shukra Venus	Sk
21. Uttara Ashadha	Dhanus 26°40' Ikb Makar 10°00'	Surya Sun	Sy
22. Shravana	Makara - Capricorn 10°00'-23°20'	Chandra Moon	Ch
23. Dhanishta	Makar 23°20' Ikb Kumbha 06°40'	Mangala Mars	Ma
24. Shatabhishak	Kumbha - Aquarius 06°40'-20°00'	Rahu	Ra
25. Purva Bhadrapada	Kumbha 20°00' Ikb Meena 03°20'	Guru Jupiter	Gu
26. Uttara Bhadrapada	Meena - Pisces 03°20'-16°40'	Shani Saturn	Sa
27. Revati	Meena - Pisces 16°40'-30°00'	Budha Mercury	Bu
Gandanta			

योग साधना भवन का लोकार्पण
10/12/2022

मजबूरी नहीं, मजबूती का नाम है महात्मा गांधी

संस्कृत विश्वविद्यालय में शहीद दिवस पर आयोजन

अहिंसक होना किसी व्यक्ति की वीरता की सबसे बड़ी निशानी है। अहिंसक व्यवहार के लिए मानव समाज को प्रशिक्षित करना चाहिए। इससे समाज में अहिंसा की भावना का प्रसार होगा। यह बात 30 जनवरी, 2023 को शहीद दिवस के अवसर पर जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रो. अल्पना कटेजा ने कही। राजस्थान विश्वविद्यालय के एचआरडीसी की निदेशक प्रो. कटेजा ने कहा कि गांधी के विचारों से मानव को प्रकृति के साथ समन्वय बिठाकर काम करना चाहिए। प्रकृति के अतिदोहन से लोगों को बाज आना चाहिए। गांवों के विकास और सुधार पर ध्यान देकर गांवों को स्वावलंबी बनाकर ग्रामीणों की जीवन गुणवत्ता बढ़ाने के प्रयास होने चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह शेखावत (आईएएस) ने वितरण की पारदर्शिता पर चर्चा करते हुए गांधी के विचारों की प्रासंगिकता पर जोर दिया। साधन और साध्य की पवित्रता की बात करते हुए उन्होंने कहा कि पेपर लीक जैसी समस्याओं का समाधान गांधी दर्शन के पास है। गांधी के अस्पृश्यता के उन्मूलन के विचारों का संविधान सभा पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके परिणाम में हरेक भारतीय को उसका अधिकार मिला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने गांधी दर्शन के अध्ययन और शोध की उपयोगिता पर बल दिया। संचालन और संयोजन गांधी अध्ययन केंद्र के संयोजक शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया। इस अवसर पर शैक्षणिक परिसर निदेशक डॉ. विनोद कुमार शर्मा सहित अनेक शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

शरणागति में सभी जीवों का अधिकार : प्रो. जयकांत शर्मा

संस्कृत विश्वविद्यालय का 23वां स्थापना दिवस समारोह संपन्न

शास्त्रों ने भगवान की शरण में जाने का अधिकार सभी वर्णों के लोगों को समान रूप से दिया है। सात शताब्दियों पहले जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने सभी वर्णों और जातियों के लिए बिना किसी भेदभाव के शरणागति का मार्ग खोल दिया। यह बात जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के 23वें स्थापना दिवस के अवसर पर 6 फरवरी, 2023 को **'सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताः'** पर हुए व्याख्यान समारोह में प्रो. जयकांत शर्मा ने कही। दिल्ली के श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में संकायाध्यक्ष प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वामी रामानंद ने सात सौ साल पहले महात्मा कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा और सैन जैसी अनेक आध्यात्मिक महाविभूतियों को उत्पन्न वैदिक सनातन धर्म की रक्षा की। संस्कृत के साथ ही देशज भाषाओं में ग्रंथों की रचना कर आध्यात्मिक लोकतंत्र की भावभूमि का निर्माण किया। आज के समय में आवश्यक है कि रामानंदाचार्य की सामाजिक समरसता का समाज में प्रयोग हो।

इससे पूर्व राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान डॉ. उमेश नेपाल ने भक्ति की मोक्ष में कारणता पर प्रकाश डालते हुए आत्म—कल्याण के लिए उसकी उपयोगिता को समझाया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने जगद्गुरु शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए मानव कल्याण में संस्कृत भाषा को उपयोगी बताया। संचालन एवं संयोजन दर्शन विभागाध्यक्ष शास्त्री कोसलेंद्रदास ने किया। मंगलाचरण वेद विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यवाहक कुलसचिव डॉ. राजधर मिश्र ने किया।

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताश्शक्ता अशक्ता: पदयोर्जगत्प्रभो:।
नापेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च न चापि कालो न हि शुद्धतापि वा।।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का दार्शनिक संसार

The Philosophical World of Jagadguru Ramanandacharya

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

27–28 फरवरी एवं 1 मार्च, 2023

ICPR
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थान संस्कृत अकादमी
जयपुर

सामाजिक समरसता के प्रतीक थे रामानंदाचार्य

संस्कृत विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

मध्यकाल में भक्ति के माध्यम से निर्गुण और सगुण का समन्वय कर सामाजिक समरसता की स्थापना करने वाले रामानंदाचार्य का कृतित्व अमर है। कबीर, रविदास, धन्ना, सैन और पीपा जैसे संतों के प्रेरक स्वामी रामानंद ने महिलाओं को भी अपनी शिष्य परंपरा में स्थान देकर मुख्य धारा में लाने का काम किया। यह बात 27 फरवरी, 2023 को जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में पूर्व मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत ने कही। उन्होंने कहा कि अगर रामानंद न होते तो हिंदू धर्म की सुरक्षा करना उस समय सबसे कठिन कार्य होता। मुख्य अतिथि सांसद श्री रामचरण बोहरा ने रामानंद दर्शन पर अनुसंधान की

आवश्यकता बताते हुए उस पर अध्ययन किये जाने की योजना बनाने को कहा। बोहरा ने कहा कि इससे स्वामी रामानंद का चिंतन और दर्शन समाज के सामने जा सकेगा और जाति पाति के बंधन टूटेंगे। विशिष्ट अतिथि राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष डॉ. सरोज कोचर ने महिलाओं से संस्कृत शिक्षा से जुडने का आह्वान किया। सारस्वत अतिथि प्रो. जयकांत शर्मा ने रामानंद दर्शन की अपूर्वता पर व्याख्यान दिया। कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने विवि में रामानंद दर्शन के अध्ययन पर तेजी से काम करने की योजना के बारे में जानकारी दी। संगोष्ठी संयोजक दर्शन विभागाध्यक्ष शास्त्री कोसलेंद्रदास ने बताया कि पहले दिन 32 शोधपत्र प्रस्तुत किये गए। दिल्ली विवि के प्रो. सत्यपाल सिंह, जेएनयू की प्रो. रंजीता दत्ता, इग्नू की प्रो. कौशल पंवार, कोटा खुला विवि के डॉ. कपिल गौतम व संस्कृत विवि के डॉ. विनोद कुमार शर्मा के व्याख्यान हुए। समारोह में महंत श्री हरिशंकरदास, श्री संजय झाला और डॉ. राजधर मिश्र सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। संगीत सत्र में पंडित श्री महेश दत्त रामायणी ने विनय पत्रिका के पदों का गान किया।

समारोह में पूर्व मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत ने संस्कृत विवि के संस्थापक पूर्व उप राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत की स्मृति को विश्वविद्यालय में सजीव बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विवि की स्थापना करके श्री भैरोंसिंह शेखावत ने प्रदेश में संस्कृत शिक्षा के विकास को स्थायी गति दी थी। विश्वविद्यालय में उनकी प्रतिमा स्थापित होना आवश्यक है। इस पर मुख्य अतिथि सांसद श्री रामचरण बोहरा ने सांसद कोष से श्री भैरोंसिंह शेखावत की प्रतिमा लगाने की घोषणा की। बोहरा ने विवि के योग साधना भवन का नाम भी श्री भैरोंसिंह शेखावत के नाम पर करने की मांग रखी।

रामानंदाचार्य ने दिया भक्ति में सभी जातियों को अधिकार

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय संगोष्ठी में दूसरे दिन रामानंद दर्शन पर मंथन हुआ। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद और राजस्थान संस्कृत अकादमी की ओर से **'जगद्गुरु रामानंदाचार्य के दार्शनिक संसार'** विषय पर संस्कृत विश्वविद्यालय में हो रही संगोष्ठी में विद्वानों ने जगद्गुरु रामानंदाचार्य को भक्ति का सबसे बड़ा आचार्य बताया। दिल्ली के लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. विष्णुपद महापात्र ने कहा कि स्वामी रामानंद ने लोक कल्याण के लिए ज्ञान और कर्म की बजाय भगवान की भक्ति और शरणागति को महत्व दिया। सभी जातियों व वर्गों में बिना भेदभाव के अपने शिष्य बनाए और उन्हें भारतीय इतिहास में अमर कर दिया। महात्मा कबीर, रैदास, धन्ना जाट, सेन भगत व पीपा के माध्यम से उन्होंने भक्ति को अंतिम छोर तक पहुंचाया।

समारोह में रेवासा की अग्रदेवाचार्य पीठ के स्वामी श्री राघवाचार्य ने स्वामी रामानंद द्वारा स्थापित की गई सामाजिक समरसता पर व्याख्यान दिया। अयोध्या के पं. श्री अजय कुमार शर्मा ने रामानंद संप्रदाय की संगीत शैली पर प्रस्तुति दी। कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने गीता की चर्चा करते हुए जड व चेतन को ब्रह्म का अंश बताया। उन्होंने कहा कि ब्रह्म ही संपूर्ण चराचर का उपभोक्ता है इस नाते ब्रह्म में सृष्टि के पालन, निर्माण और संहार तीनों शक्तियां विद्यमान हैं। संयोजक शास्त्री कोसलेंद्रदास ने स्वामी रामानंद द्वारा गीता पर रचित आनंद भाष्य की चर्चा करते हुए उसे भक्ति योग का ग्रंथ बताया।

डॉ. सारिका वार्ष्णेय, डॉ.शंभु कुमार झा और अयोध्या के स्वामी श्री सत्यनारायणदास के व्याख्यान रामानंद दर्शन पर हुए। सायंसत्र में प्रो. जवाहर लाल, डॉ. चेतना कुमावत, डॉ. माया वर्मा, डॉ. मंजू पटेल और डॉ. कुलदीप सिंह पालावत के व्याख्यान हुए।

समरसता के लिए संजीवनी है रामानंदाचार्य का दर्शन: डीजीपी उमेश मिश्रा

संस्कृत विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

सामाजिक सुधार के आंदोलन की शुरुआत सात शताब्दी पहले जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने की थी। वे दार्शनिक, समाज सुधारक और मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक थे। कबीर और रैदास जैसे महात्माओं के साहित्य में आचार्य रामानंद के विचार प्रकट होते हैं। उनके विचार समाज में समरसता स्थापित करने के लिए संजीवनी के समान हैं। यह बात विश्वविद्यालय में हुई तीन दिवसीय संगोष्ठी के समापन सत्र में डीजीपी उमेश मिश्रा ने 01 मार्च, 2023 को कही। उन्होंने कहा कि आज समाज को भारतीय दर्शन में निहित ज्ञान मीमांसा की आवश्यकता है।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद और राजस्थान संस्कृत अकादमी की ओर से संस्कृत विश्वविद्यालय में हुई संगोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि वरिष्ठ विधायक श्री नरपत सिंह राजवी ने कहा कि रामानंदाचार्य ने जात-पात और छुआछूत से दूर जाकर ऐसे भक्ति संप्रदाय की स्थापना की थी, जो आज भी हिंदू समाज को एकजुट बनाने में कारगर साबित हो रहा है। उन्होंने सगुण-निर्गुण के द्वंद्व को मिटाकर भक्ति के मार्ग सभी के लिए खोल दिए। बीएचयू के प्रो. धनंजय पांडेय ने भारतीय दर्शन में रामानंदाचार्य के स्थान को महत्वपूर्ण बताया। दिल्ली के प्रो. सच्चिदानंद मिश्र ने रामानंद दर्शन पर अध्ययन और अनुसंधान की जरूरत बताई। अयोध्या के महंत श्री मिथिलेशनंदिनी शरण ने रामानंद संप्रदाय की भक्ति निष्ठा और साधु सेवा पर व्याख्यान दिया। त्रिवेणी के श्री रामरिछपालदास ने रामभक्ति के माध्यम से मानवता के प्रसार की बात कही।

कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने अध्यक्षता करते हुए संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी समन्वयक शास्त्री कोसलेंद्रदास ने बताया कि संगोष्ठी में दिल्ली के प्रो. प्रभाकर प्रसाद, अयोध्या के स्वामी श्री सत्यनारायणदास, स्वामी श्री आनंददास, स्वामी श्री मल्लिकार्जुनदास सहित प्रो. महानंद झा, डॉ. श्रुति मिश्रा, श्रीनिवास शर्मा व डॉ. प्रणु शुक्ला के व्याख्यान हुए। संगोष्ठी में 115 शोधपत्र पढ़े गए। मंगलाचरण डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा व धन्यवाद ज्ञापन श्री संजय झाला ने दिया।

मन और शरीर के पोषण में अन्न की ही भूमिका, अन्न से ही बनता है मन-कोठारी

डॉ. गुलाब कोठारी का **'अन्नाद्‌द्रवन्ति भूतानि'** पर व्याख्यान

विश्वविद्यालय में **जगद्गुरु रामानंदाचार्य का दार्शनिक संसार** विषय पर संगोष्ठी में 28 फरवरी, 2023 को राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी का **'अन्नाद्‌द्रवन्ति भूतानि'** पर व्याख्यान हुआ। कोठारी ने कहा कि हम सृष्टि के अभिन्न अंग हैं। अत: सृष्टि की हर रचना के साथ जुड़े हुए हैं। हम सब एक-दूसरे का अन्न भी हैं। अन्न के प्रसंग में श्रुति है **'सर्वमिदमन्नाद: सर्वमिदमन्नम्'**। अन्नाद का अर्थ है ग्रहण करने वाला, खाने वाला। इसका अर्थ है कि सब कुछ अन्न हैं और सभी कुछ अन्नाद हैं। जिसका जिससे निर्वाह होता है वही उसका अन्न है, जैसे आकाश का अन्न शब्द है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने गीता ज्ञान को विज्ञान से जोड़ते हुए कहा कि गीता को समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।

डॉ. कोठारी ने कहा कि वेद में सोम अन्न और अग्नि भोक्ता हैं। यज्ञ से ही नया निर्माण होता है। अनेक स्वरूपों में अन्न भी उच्छिष्ट ही होता है, आहुति कर्ता का। कहते हैं उच्छिष्ट से ही सृष्टि होती है। कई प्राणी भी अन्य प्राणियों का अन्न बनते हैं। शास्त्र कहते हैं-**जीवो जीवस्य भोजनम्**। अन्न का स्वामी चन्द्रमा है और मन का भी स्वामी चन्द्रमा है। मन और शरीर के पोषण में अन्न की ही भूमिका रहती है। अन्न से मन बनता है। मन में इच्छा उत्पन्न होती है। प्राणों में क्रिया और वाक् का निर्माण। इच्छा का आधार है ज्ञान। इच्छा ही माया है, ज्ञान ब्रह्म है। जैसा मन, वैसी इच्छा, वैसा ही कर्म। मन की दो गतियां होती है-सृष्टि साक्षी और मुक्ति साक्षी। सृष्टि साक्षी मन-प्राण-वाक् के कर्म ब्रह्म-क्षत्र-विट्वीर्ययुक्त प्राणी निष्पन्न करता है। ये स्थूल कर्म होते हैं। व्यक्ति जब मुक्ति की ओर बढ़ता है, तब उसका चित्त ऊर्ध्वगति करने लगता है। मन भी आनन्द-विज्ञान की ओर हो जाता है। स्थूल धरातल छूटकर सूक्ष्म में प्रवेश हो जाता है। हर खुशी के पल की अभिव्यक्ति अन्न होती है।

कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने गीता की चर्चा करते हुए जड-चेतन को ब्रह्म का अंग बताया। ब्रह्म ही संपूर्ण चराचर का उपभोक्ता है इस नाते ब्रह्म में पालन, निर्माण और संहार तीनों शक्तियां विद्यमान है। संगोष्ठी संयोजक दर्शन विभागाध्यक्ष शास्त्री कोसलेंद्रदास ने स्वामी रामानंद द्वारा गीता पर रचित आनंदभाष्य की चर्चा करते हुए उसे भक्ति योग का ग्रंथ बताया। इस अवसर पर देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए हुए शिक्षकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें वेद विज्ञान पुस्तक भेंट की गई।

नारी है शक्ति-स्वरूपा

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस-2023 पर कार्यक्रम

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में 'अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में 18 मार्च 2023 को महिला अध्ययन केन्द्र की ओर से **'भारतीय संस्कृति, समाज एवं संविधान में नारी'** विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता राजस्थान विश्वविद्यालय - वूमन्स एसोसिएशन की अध्यक्ष प्रो. दमयन्ती गुप्ता ने नारी के संरक्षण हेतु भारतीय संवैधानिक - नियमों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नारी आज घर में ही सुरक्षित नहीं है । अतः उसे स्वयं जागृत रहना होगा । विशिष्ट वक्ता केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (जयपुर परिसर) की पूर्व निदेशक प्रो. भगवती सुदेश ने भारतीय संस्कृति में नारी के शक्ति स्वरूप की विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने कहा कि समाज में सभी जगह आसुरी भाव व्याप्त है। इससे मुक्त होने से ही नारी का उत्थान संभव है। केंद्र की संयोजिका डॉ. स्नेहलता शर्मा ने कार्यक्रम के आरम्भ में स्वागत उद्बोधन करते हुए विषय उपस्थापन एवं केंद्र द्वारा किए जा रहे कार्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यवाहक कुलसचिव डॉ. राजधर मिश्र ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्वेता तिवारी ने किया । कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी-कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

क्रीडा प्रतियोगिता

डॉ. शशि कुमार शर्मा, खेल प्रभारी तथा डॉ. सुरेन्द्र सिंह शेखावत, निदेशक, शारीरिक शिक्षा के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न अन्तर्महाविद्यालयीय क्रीडा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की क्रिकेट, योगा, कुश्ती एवं एथेलेटिक्स की टीमों ने विभिन्न स्थानों पर आयोजित अखिल भारतीय/ वेस्ट जोन अन्तर्विश्वविद्यालयीय क्रीडा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपने क्रीडा कौशल का प्रदर्शन किया।

व्याकरणे अपवादशास्त्रम्

व्याकरणविभागीयैकदिवसीया राष्ट्रिया व्याकरणसंगोष्ठी

विश्वविद्यालयस्य गोस्वामी-श्रीतुलसीदाससभागारे दिनांके 21, मार्च 2023, मंगलवासरे **"व्याकरणे अपवादशास्त्रम्"** इति विषयमधिकृत्य व्याकरणविभागेन एकदिवसीया राष्ट्रिया व्याकरणसंगोष्ठी आयोजिता। संगोष्ठ्या: उद्घाटनसत्रे अध्यक्षत्वेन विश्वविद्यालयस्य कुलपति: प्रो. रामसेवक दुबे, मुख्यातिथित्वेन जोधपुरस्थ जयनारायणव्यासविश्वविद्यालयस्य पूर्वसंस्कृतविभागाध्यक्ष: प्रो. सत्यप्रकाश दुबे, सारस्वतातिथित्वेन गुजरातस्थसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य पूर्वकुलपति: प्रो. अर्कनाथचौधरी, विशिष्टातिथित्वेन जयपुरपरिसरस्थ-केन्द्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य व्याकरणविभागस्याचार्य: प्रो. श्रीधरमिश्र:, प्रो. विष्णुकान्तपाण्डेयश्च समागत्य स्वकीयविशिष्टव्याख्यानेन उपकृतवन्त:। संगोष्ठ्या: समापनसत्रे मुख्यातिथित्वेन प्रो. राजेन्द्रकुमारशर्मा, राजस्थानविश्वविद्यालयस्य दर्शनविभागस्याचार्य:, सारस्वतातिथित्वेन सियारामदासमहाराज:, विशिष्टातिथित्वेन प्रो. अशोककुमारतिवारी, प्रो. मोहनलालशर्मा च समागत्य स्वकीयविशिष्टव्याख्यानेन उपकृतवन्तः। अस्मिन्नवसरे खोजीपीठाधीश्वररामरिछपालदासमहाराजा: आशीर्वचांसि दत्तवन्त:। संगोष्ठ्या: समन्वयक: डॉ. राजधरमिश्र:, व्याकरणविभागाध्यक्ष:, संयोजक: डॉ. शशिकुमारशर्मा, सहायकाचार्य:, व्याकरणविभाग:, सह-संयोजकश्च डॉ. दयारामदास:, सहायकाचार्य:, व्याकरणविभाग: आसन्। अस्यां संगोष्ठ्यां 135 शोधच्छात्रा: भागं गृहीतवन्त:।

माननीय कुलपति द्वारा अनुष्ठित विभिन्न प्रवृत्तियां

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
अनुसन्धान प्रक्रिया एवं सिद्धान्त

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
एवं

शिक्षक संवर्ग प्रतिवेदन

विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियां

नई दिल्ली स्थित श्रीलालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विवि के वास्तुशास्त्र विभाग में ज्योतिष विभागाध्यक्ष **डॉ. विनोद कुमार शर्मा** ने **वास्तु एवं रोग मीमांसा** पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में पूर्व कुलपति एवं विभागाध्यक्ष प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी ने अध्यक्षता की।

21.01.2023 को ज्योतिष विभाग में विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का विषय **गणित ज्योतिष में वेधप्रकिया** था। ज्योतिष विभागाध्यक्ष **डॉ. विनोद कुमार शर्मा** की अध्यक्षता में डॉ. आलोककुमार शर्मा ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। स्वागत एवं संचालन डॉ. कैलाश चंद शर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिवाकान्त मिश्र ने किया।

---

1. **डॉ. शशि कुमार शर्मा** को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से प्राप्त हुए तीन प्रोजेक्टस्

   जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शशि कुमार शर्मा को पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में नूतन अनुसन्धान के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अष्टादशी स्कीम में डॉ. शशि कुमार शर्मा के तीन प्रोजेक्टस् स्वीकृत किये हैं। जो इस प्रकार से हैं –

   1. A Critical Edition of Ratnarnava (Commentary on Vaiyakaransiddhantakaumudi) By krishnamisra.
   2. A Critical Edition of Vidvadbhusana (By Balkrisana Bhatta) With Manjubhasini Commentary By Madhusudana.
   3. A Critical Edition of Vaiyakarana Sarvaswa By Dharnidhar.

उक्त तीनों प्रोजेक्टस् को पूर्ण करने के लिए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. शर्मा को ६,००,००० (छः लाख) रूपये स्वीकृत हुए है।

3. डॉ. शशि कुमार शर्मा द्वारा लिखित "Erudition of Grantha Script – ग्रन्थलिपिविज्ञानम्" पुस्तक का हुआ लोकार्पण – दिनाङ्क २७, फरवरी २०२३ को विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शशि कुमार शर्मा द्वारा लिखित "Erudition of Grantha Script – ग्रन्थलिपिविज्ञानम्" पुस्तक का लोकार्पण हुआ। दर्शन विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी उद्घाटन सत्र में सांसद श्री रामचरण बोहरा, पूर्व मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे, राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष डॉ. सरोज कोचर सहित अन्य उपस्थित अतिथियों के द्वारा इस अद्वितीय पुस्तक का लोकार्पण किया गया है।

4. डॉ. शशि कुमार शर्मा को संस्कृत संवर्धन कार्यक्रम और गतिविधियों को आयोजित कराने के लिए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय से एक लाख का मिला अनुदान –

   दिनांक २१, मार्च २०२३ को विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के डॉ. शशि कुमार शर्मा को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा सत्र २०२२-२३ के संस्कृत संवर्धन कार्यक्रम और गतिविधि आयोजित करने के लिए एक लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. शर्मा "द्विदिवसीया राष्ट्रिया संस्कृत-अप्रकाशितपाण्डुलिपिपरिचयसंगोष्ठी" का आयोजन करेगें।

   दिनांक २०, मार्च २०२३ को विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के डॉ. शशि कुमार शर्मा को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा सत्र २०२२-२३ के व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए एक लाख रूपये का अनुदान प्रदान किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. शर्मा Mooc Development प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करेगें।

डॉ. शशिकुमार शर्मा
सहायक आचार्य

साहित्य-विभागीय व्याख्यान

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग में 21.9.2022 को **"कालिदाससाहित्य में पर्यावरणसंरक्षण"** विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यविभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार शर्मा, संयोजन डॉ. स्नेहलता शर्मा तथा संचालन डॉ. मधुबाला शर्मा ने किया। मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित डॉ जितेंद्र कुमार अग्रवाल ने कालिदास के काव्यों में वर्णित पर्यावरण संरक्षण के महत्व को प्रतिपादित किया, जिससे छात्र पर्यावरण के प्रति जागरूक हुए।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने कालिदास साहित्य में वर्णित पादपों की ज्योतिषशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अवधारणा स्पष्ट की, जिससे साहित्य के छात्रों को ज्योतिष व पर्यावरण के संबंध में नवीन ज्ञान प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम की संयोजिका डॉ स्नेहलता शर्मा ने कालिदास साहित्य में पर्यावरण पर आधारित विवेचन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की संचालिका डॉ.मधुबाला शर्मा ने प्रकृतिपरक देवविवेचन प्रस्तुत कर छात्रों को आध्यात्मिक दृष्टि से पर्यावरण के प्रति आकृष्ट किया। छात्रों ने अति उत्साह से भाग लेकर विभाग में वृक्षारोपण भी किया।

डॉ.मधुबाला शर्मा को "विक्रम- कालिदास-पुरस्कार"

जगद्गुरुरामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की साहित्य विभागाध्यक्ष डॉ.मधुबाला शर्मा को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जयिनी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह (10.11.2022) में विक्रम-कालिदास-पुरस्कार प्रदान किया गया।

कालिदास महोत्सव की शोधपरिषद् ने डॉ.शर्मा द्वारा लिखित शोध-पत्र "कालिदाससाहित्ये देवविमर्शः" का चयन उत्कृष्ट शोध-पत्र के रूप में किया, एतदर्थ डॉ मधुबाला शर्मा को विक्रम-कालिदास-पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

डॉ. मधुबाला शर्मा
साहित्य विभागाध्यक्ष

डॉ. दयारामदास, सहायक आचार्य, व्याकरण विभाग ने केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित व्याकरणशास्त्रविद्याशाखीयं राष्ट्रियसम्मेलनम् में मुख्य वक्ता के रूप में 'लौकिकन्यायप्रयोगः' विषय पर व्याख्यान दिया। 'बालमनोरमाविमर्शः' ग्रन्थ प्रकाशनार्थ तैयार किया है।

डॉ. दयारामदास
सहायक आचार्य, व्याकरण विभाग

डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा को परीक्षा नियंत्रक का अतिरिक्त कार्यभार

कुलपति महोदय ने परीक्षा नियंत्रक का अतिरिक्त कार्यभार ज्योतिष विभाग के सहायक आचार्य डॉ कैलाश चंद्र को दिया। परीक्षा नियंत्रक श्री नरेंद्र चतुर्वेदी के सेवानिवृत्त होने पर उक्त कार्य का अतिरिक्त दायित्व डॉ. शर्मा को प्रदान किया डॉ. शर्मा ने उक्त पद का कार्यभार 29 मार्च 2022 को ग्रहण किया।

वार्ताप्रसारण : आकाशवाणी द्वारा डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा की दो वार्ताएं इस वर्ष प्रसारित हुई गणपति चतुर्थी को उपलक्षित करते हुये आदिपूज्यो विनायक: तथा नूतनवर्ष विक्रम संवत 2080 के उपलक्ष में भारतीयो नव संवत्सर:।

धर्मसभा बसंत संपादन पर चर्चा कार्यक्रम में सहभागिता : राज.महा. आचार्य संस्कृत महाविद्यालय गांधीनगर जयपुर में धर्मसभा में बसंत संपाद चर्चा में डॉ. कैलाश चंद शर्मा ने सहभागिता की। इस अवसर पर डॉ शर्मा को उत्तरीय स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया (20 मार्च 2023)

ज्योतिष साधना शिविर सम्मान : ज्योतिष वेद वेदांग संस्कृत संस्थान जयपुर में दिगंबर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी व पंचांग पूजन कार्यक्रम में धर्म विज्ञान व अध्यात्म पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। इस अवसर पर डॉ. शर्मा के ज्योतिष अवदान को रेखांकित करते हुए संस्थान ने ज्योतिष साधना शिखर सम्मान से आपका स्वागत किया(18-19 मार्च 2023)

आजादी के अमृत महोत्सव व माघ महोत्सव पर ज्योतिष परिचर्चा : आजादी के अमृत महोत्सव में माघ महोत्सव के उपलक्ष में राज.सं.अकादमी व ज.रा.रा.सं. विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में चिकित्सा ज्योतिष पर एक ज्योतिष परिचर्चा का आयोजन डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा के संयोजकत्व में आयोजित किया गया। 16 फरवरी 2022 को आयोजित इस परिचर्चा में वरिष्ठ आचार्य प्रोफेसर रामपाल शर्मा एवं रा.सं.संस्थान के आचार्य प्रोफेसर श्याम देव मिश्रा प्रतिभागी रहें।

पञ्चाङ्ग श्रवण एवं लोकार्पण समारोह में सहभागिता : दिनांक 1 अप्रैल 2022 ई. को राज.म.आ.सं. महाविद्यालय, गांधीनगर में आयोजित भारतीय नववर्ष के अवसर पर पञ्चाङ्ग लोकार्पण व पञ्चाङ्ग श्रवण कार्यक्रम में डॉ कैलाश चंद्र शर्मा के सहभागिता की। भारतीय नववर्ष की वैज्ञानिकता पर हुये इस कार्यक्रम में डॉ शर्मा को सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के जयपुर परिसर की व्याकरण विद्याशाखा द्वारा "व्याकरणशास्त्रे लौकिकन्यायानामुपयोग:" विषय पर 27- 28 मार्च, 2023 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में सारस्वत अतिथि के रूप में **डॉ. दिवाकर मिश्र**, सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग ने व्याख्यान प्रदान किया। व्याकरण विभाग के प्रोफेसर विष्णुकांत पांडे ने डॉ. मिश्र का सम्मान किया।

दर्शन एवं योग विभाग अध्यक्ष महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेंद्रदास)

- कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा जोधपुर में 25 से 27 मार्च, 2023 को आयोजित राजस्थान साहित्य उत्सव में सम्मिलित हो राजस्थान उर्दू अकादमी के अध्यक्ष डॉ. हुसैन रजा खां और राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष डॉ. सरोज कोचर जी के साथ "साहित्य में सर्वधर्म समभाव" विषयक सत्र का संचालन किया। इस अवसर पर श्रीमती प्रियंका जोधावत (आरएएस), श्री संजय झाला (निदेशक, राजस्थान संस्कृत अकादमी), प्रो. सरोज कौशल (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर) डॉ. भरत ओला और डॉ. राजेश कुमार व्यास (जन संपर्क अधिकारी - राजभवन) उपस्थित रहे।
- Delivered keynote address on "Concept of development in Sanskrit Literature" in International Seminar at St. Wilfred's college of Girls in Jaipur on 3rd January, 2023.
- Recorded a special programme with Prof. Ramkumar Sharma ji of Central Sanskrit University on 'Indian culture and Sanskrit' (भारतीय संस्कृति और संस्कृत) on Doordarshan on 12 December, 2022.
- पूज्यपाद ब्रह्मलीन स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज द्वारा संस्थापित मानव सेवा संघ के स्थापना दिवस और गीता जयंती के अवसर पर 12 दिसंबर, 2022 को 'गीता सुगीता कर्तव्या' पर व्याख्यान दिया।
- गीता जयंती पर श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर में हुए कार्यक्रम में बच्चों के साथ 3 दिसंबर, 2022 परिचर्चा हुई।
- श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली में 'सर्वदर्शनसंग्रह' पर हुई एकादश दिवसीय कार्यशाला में श्रीरामानुज दर्शन पर दिनांक 26 नवम्बर, 2022 को व्याख्यान दिया। इस अवसर पर प्रो. संगीता खन्ना, प्रो. प्रभाकर प्रसाद व प्रो. जवाहरलाल उपस्थित रहे।
- 30 अक्टूबर, 2022 को श्री दयालसिंह शेखावत जी द्वारा राजस्थानी भाषा में अनूदित भागवत महापुराण के विमोचन समारोह में व्याख्यान दिया। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत एवं श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत, IAS भी उपस्थित रहे।

योग विभाग की गतिविधियां

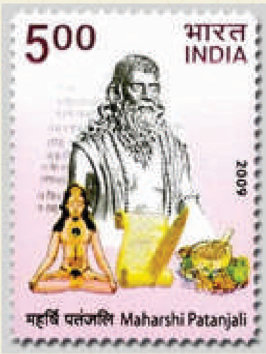

1. विश्व योग दिवस (21 जून, 2022) का आयोजन
2. दिसम्बर माह में योग टीम को इंटर कॉलेज टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक
3. विभाग की योग टीम द्वारा राष्ट्रीय योग टूर्नामेंट उडीसा में प्रतिभा प्रदर्शन
4. मा. कुलपति प्रोफेसर रामसेवक दुबे का उद्बोधन

श्री अग्रदेवाचार्य ग्रन्थागार

श्री अग्रदेवाचार्य ग्रन्थागार केन्द्रीय पुस्तकालय का समय-समय पर विद्वानों द्वारा भ्रमण एवं अवलोकन किया गया, जिसमें पुस्तकालय की व्यवस्था को सराहनीय बताया गया। केन्द्रीय पुस्तकालय में लगभग 200 छात्रों की बैठने की व्यवस्था तथा शोधार्थियों के लिए पृथक से शोध केबिन बनाये गये हैं। केन्द्रीय पुस्तकालय के स्वचालन (Automation) के लिए NIC से ई-ग्रन्थालय सॉफ्टवेयर नि:शुल्क प्राप्त कर पुस्तकों का कम्प्यूटीकरण किया जा रहा है। 31 दिसम्बर, 2021 तक लगभग 20875 पुस्तकों का डेटाबेस तैयार हो गया है तथा शेष पुस्तकों के कम्प्यूटीकरण की प्रक्रिया जारी है। पुस्तकों का आदान-प्रदान छात्रों, शिक्षकों, शोधार्थियों इत्यादि को ई-ग्रन्थालय सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर किया जा रहा है। श्री अग्रदेवाचार्य ग्रन्थालय केन्द्रीय पुस्तकालय संस्कृत पुस्तकालय है, जिसमें संस्कृत के सांगोपांग अध्ययन-अध्यापन हेतु संस्कृत से संबंधित विषयों के ग्रन्थों का संग्रह है। जुलाई 2002 में 267 पुस्तकों के साथ अध्ययन केन्द्र में शुभारम्भ किया गया था। इस पुस्तकालय को सितम्बर, 2005 में विश्वविद्यालय परिसर के नये भवन में स्थानान्तरित किया गया था। दिसम्बर, 2022 तक की अवधि में इस पुस्तकालय में 43030 पुस्तकें / रिपोर्ट (284) व 280 सी.डी./ डी.वी.डी. तथा 600 शोध प्रबंध के साथ-साथ संस्कृत शोध पत्रिकाओं के 2100 पुराने अंक भी शोधार्थियों के उपयोगार्थ हैं। पुस्तकालय के प्रभारी डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी हैं।

गुलाबी नगरी में हुआ राष्ट्रीय संस्कृत फिल्म फेस्टिवल

संस्कृत विश्वविद्यालय और संस्कृत अकादमी की ओर से आयोजन

राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में जयपुर के जैम सिनेमा में 18-19 फरवरी, 2023 को रिफ फिल्म क्लब के सहयोग से दो दिवसीय को राष्ट्रीय संस्कृत फिल्म फैस्टिवल हुआ। समारोह का उद्घाटन जैम सिनेमा में मुख्य अतिथि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्री महेश जोशी, अध्यक्षता कर रहे विप्र कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री महेश शर्मा, सारस्वत अतिथि प्रोफेसर रामसेवक दुबे, कुलपति-जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, कला एवं संस्कृति विभाग के उप सचिव जगदीश आर्य, अकादमी की अध्यक्ष डॉ. सरोज कोचर, निदेशक श्री संजय झाला और रिफ फिल्म क्लब के फाउन्डर श्री सोमेन्द्र हर्ष ने दीप प्रज्वलित कर किया।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाइयों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी, डॉ. शशि कुमार शर्मा और डॉ. शत्रुघ्न सिंह हैं। NSS की तीनों इकाइयाँ डॉ. दिवाकर मिश्र, सहायक आचार्य-शिक्षाशास्त्र के संयोजकत्व में राजस्थान राज्य, NSS सेल और युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विनिश्चित तथा समय- समय पर विनिर्दिष्ट गतिविधियों का आयोजन कर, विश्वविद्यालय के छात्र -छात्राओं में **"मैं नहीं आप" (NOT ME BUT YOU)** सेवा भावना का विकास करते हुए इन्हें सेवापरायण और ज़िम्मेदार भारतीय नागरिक के रूप गढती हैं।

अनुसंधान केन्द्र द्वारा सम्पादित गतिविधियाँ

1. अनुसंधान केन्द्र द्वारा अब तक कुल 258 शोधार्थियों को विद्यावारिधि (पीएच.डी.) की उपाधि प्रदान की जा चुकी हैं।
2. विश्वविद्यालय अनुसंधान केन्द्र के अधीन कुल 08 पीठों का संचालन किया जाता है। इन पीठों पर नियुक्ति प्रक्रियाधीन है।
3. अनुसंधान केन्द्र द्वारा विद्यावारिधि (Ph.D.) उपाधि हेतु पंजीकृत किये जाने के लिए वाले अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार षाण्मासिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (कोर्स-वर्क) का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 101 प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा कोर्स-वर्क में भाग लिया गया।
4. विश्वविद्यालय द्वारा एम.फिल. मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थियों की विद्यावारिधि (Ph.D.) में पंजीकृत किये जाने हेतु उनकी विषय निर्वाचिनी समिति (DRC) का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।
5. अनुसंधान केन्द्र द्वारा अब तक कुल 17 ग्रन्थों का प्रकाशन किया जा चुका है।
6. वर्तमान में अनुसंधान केन्द्र द्वारा विश्वविद्यालय शोध पत्रिका वयम् के 32-33 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।
7. अनुसंधान केन्द्र द्वारा बाहर से पधारे विद्वानों के द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन किया गया।
8. अनुसंधान केन्द्र द्वारा ऑनलाईन एवं ऑफलाईन माध्यम से दिनांक 21.04.2022 से 27.04.2022 तक सप्त-दिवसीय शोधप्रविधि कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 367 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
9. वर्तमान में अनुसंधान केन्द्र द्वारा विद्वानों से लिखित ग्रन्थों प्रकाशन हेतु प्राप्त हो रहे हैं। इस हेतु उक्त ग्रन्थों को प्रकाशन किये जाने के लिए नियमानुसार प्रकाशन भाषान्तरण बोर्ड का नवीन गठन किया गया है। उक्त प्रकाशन भाषान्तरण बोर्ड की संस्तुति के आधार पर विद्वानों के द्वारा लिखित ग्रन्थों का विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशन का कार्य किया जाएगा।
10. विश्वविद्यालय अनुसंधान केन्द्र द्वारा 04 शोध संस्थानों को मान्यता प्रदान कर रखी है। उक्त संस्थाओं के द्वारा शोध कार्य में गुणवत्ता एवं अनुसंधान का कार्य सम्पादित किया जा रहा है।
11. अनुसंधान केन्द्र पर विद्यावारिधि (पीएच.डी.) हेतु समय-समय पर वाक्परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	परीक्षार्थी का नाम	पिता का नाम	कक्षा
1.	22803	**प्रमोद कुमार शर्मा**	दीनदयाल शर्मा	सर्वाचार्य
2.	11075	**कोमल चौधरी**	बाबूलाल चौधरी	शास्त्री (बी.ए.)
3.	91019	**मुस्कान**	अनिल शर्मा	संयुक्ताचार्य-शास्त्री
4.	23281	**श्रुति जैन**	दीपक जैन	आचार्य (प्राकृत जैनागम)
5.	24920	**दीपक कुमार शर्मा**	जगदीश प्रसाद शर्मा	आचार्य (व्याकरण)
6.	23011	**रेखा चौधरी**	हनुमान सहाय चौधरी	आचार्य (धर्मशास्त्र)
7.	22803	**प्रमोद कुमार शर्मा**	दीनदयाल शर्मा	आचार्य (ज्योतिष)
8.	21247	**दिनेश सेन**	हनुमान सेन	आचार्य (साहित्य)
9.	25141	**अनिल कुमार शर्मा**	राज कुमार शर्मा	आचार्य - वेद (अथर्ववेद)
10.	95001	**अंजू कंवर**	गोपाल सिंह	संयुक्ताचार्य (साहित्य)
11.	95036	**पूजा शर्मा**	रामजी लाल शर्मा	संयुक्ताचार्य (व्याकरण)
12.	95151	**अमित गौतम**	गोपाल लाल शर्मा	संयुक्ताचार्य (वेद)
13.	95061	**दीनदयाल शर्मा**	सत्यनारायण शर्मा	संयुक्ताचार्य (ज्योतिष)
14.	92003	**आदित्य माटोलिया**	राजेन्द्र शर्मा	एम.ए. (योग)
15.	46261	**निशा शर्मा**	केदार प्रसाद शर्मा	शिक्षा शास्त्री (बी.एड.)
16.	52002	**अनुकृति खाण्डल**	गंगा सहाय शर्मा	शिक्षाचार्य (एम.एड.)

विद्यावारिधि (Ph.D.) उपाधि प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	विषय
1	**कमलेश कुमार शर्मा**	सीता राम शर्मा	वेद
2	**प्रेरणा गुप्ता**	सत्य नारायण गुप्ता	धर्मशास्त्र
3	**कैलाश चन्द्र बुनकर**	छीतर मल बुनकर	धर्मशास्त्र
4	**रामप्रियदास रामस्नेही**	रामरतनदास रामस्नेही	व्याकरण
5	**मनीष कुमार शर्मा**	लाल चन्द शर्मा	व्याकरण
6	**आभा जैन**	कमलेश कुमार जैन	व्याकरण
7	**रोहित कुमार सैनी**	हनुमान सहाय सैनी	व्याकरण
8	**कृष्णदेव शुक्ल**	योगेन्द्र शुक्ल	व्याकरण
9	**पुष्पा कुमारी झांझडिया**	दौलतराम	साहित्य
10	**सुमन लता सैनी**	नरेन्द्र कुमार सैनी	साहित्य
11	**अनिरुद्ध दाधीच**	राधेश्याम	साहित्य
12	**दया शंकर शर्मा**	कन्हैया लाल शर्मा	साहित्य
13	**श्यामसुन्दर शेखावाटी**	मोहन लाल शर्मा	शिक्षा
14	**अजय कुमार शर्मा**	भगवान सहाय शर्मा	शिक्षा

मानद उपाधियाँ

विश्वविद्यालय माननीय कुलाधिपति महोदय की स्वीकृति उपरान्त 02 उपाधियाँ विद्यावाचस्पति (D.Lit.) एवं 02 उपाधियाँ विद्यावारिधि (Ph.D.) की मानद् उपाधियाँ पञ्चम दीक्षान्त समारोह में वितरित की जा रही है, विवरण है :-

विद्यावाचस्पति (D.Lit.) मानद उपाधि

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति, श्री लालबहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्री गोपाल शर्मा
संस्थापक सम्पादक
जयपुर महानगर टाइम्स, जयपुर

विद्यावारिधि (Ph.D.) मानद उपाधि

श्री अनूप बरतरिया
सुख्यात शिल्पशास्त्रविद्, जयपुर

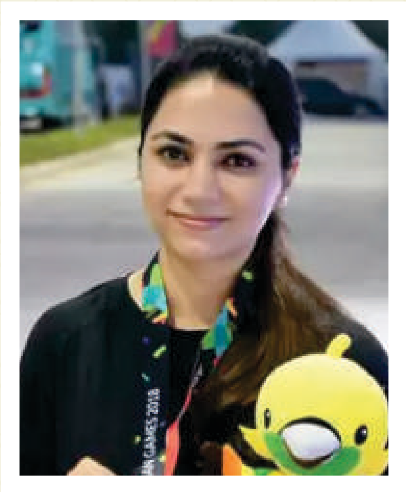

सुश्री अपूर्वी चन्देला
इन्टरनेशनल एयर राइफल शूटर, जयपुर

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालये 2023-24 सत्रे पाठ्यविषयाः

- वेद-पौरोहित्यम्/धर्मशास्त्रम्
- ज्योतिषफलितम्
- नव्यव्याकरणम्
- जैनदर्शनम्
- साहित्यम्
- योगविज्ञानम्
- ज्योतिषगणितम्
- पुराणेतिहासम्
- धर्मशास्त्रम्
- दर्शनम्
- ज्योतिषगणितम्
- पीजीडीसीए
- योगविज्ञानम्
- कर्मकाण्डं पौरोहित्यञ्च
- ज्योतिषम्
- वास्तुविज्ञानम्
- उन्नतज्योतिषगणितम्
- उन्नतज्योतिषवास्तुः
- Advance Yoga Course
- E-Certificate course in Educational Research
- Web Designing Course
- DTP
- Office Automation
- Bhartiya Darshan
- Short Term Course in Textual Criticism
- Short Term Course in Ancient Indian Script (Sarda Script)
- Short Term Course in Sabdanushasanam
- Short Term Course in Sahitya
- Short Term Course in Gram Porohitya Training
- JyotishPravesh Certificate Course
- VastuPravesh Certificate Course
- Medical Astrology Diploma Course
- P.G. Diploma IN Gandhian Studies
- P.G. Diploma IN Ambedkar Studies
- P.G. Diploma IN Women's Studies
- P.G. Diploma in Mantra Methodology &Theraphy
- Post Diploma in french
- Diploma in French
- Diploma in German
- Post Diploma in German
- P.G. Diploma In Jornalism& mass Communication
- P.G. Diploma in manuscriptology& paleography
- Certificate course in french
- Certificate course in German
- PSST
- PSSST
- PSA

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य–
राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः

विश्वविद्यालय परिसर में विभिन्न शास्त्रीय विषयों का अध्यापन पारम्परिक पद्धति के साथ ही आधुनिक शिक्षण-अधिगम संसाधनों से करवाया जाता है। इससे विद्यार्थी में प्राचीन व नवीन पहुंच एवं समावेशिता का स्तर बढ़ता है। वेद, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य एवं योग विज्ञान जैसे शास्त्रीय विषयों के साथ ही हिन्दी, अंग्रेजी, कम्प्यूटर, राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, लोकप्रशासन एवं पर्यावरण विज्ञान का अध्यापन विद्यार्थियों को करवाया जा रहा है। अनुसंधान एवं व्यावसायिक प्रक्रियाएं बढ़ाने की दिशा में विश्वविद्यालय सतत् कार्य कर रहा है।

पाठ्यक्रम एवं उपाधियां Curriculum & Degrees

1. **शास्त्री (स्नातक) त्रिवर्षीय**
2. **आचार्य (स्नातकोत्तर) द्विवर्षीय**
3. **संयुक्ताचार्य (स्नातक + स्नातकोत्तर) पंचवर्षीय**
4. **शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) द्विवर्षीय**
5. **इन्टीग्रेटेड शास्त्री-शिक्षाशास्त्री चतुर्वर्षीय**
6. **शिक्षाचार्य (एम.एड.) द्विवर्षीय**
7. **योगविज्ञान शास्त्री (बी.एससी./बी.ए.)**
8. **योगविज्ञान आचार्य (एम.एससी./एम.ए.)**
9. **विद्यानिधि (एम.फिल्.)**
10. **विद्यावारिधि (पीएच.डी.)**
11. **विद्यावाचस्पति (डी.लिट्.)**
12. **प्रातःकालीन पीजी डिप्लोमा योग (एकवर्षीय)**
13. **सर्टिफिकेट कोर्स योग (त्रैमासिक)**
14. **सायंकालीन डिप्लोमा ज्योतिष (एकवर्षीय)**
15. **सायंकालीन डिप्लोमा वास्तुशास्त्र (एकवर्षीय)**
16. **डिप्लोमा कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य (एकवर्षीय)**
17. Post Graduate Diploma in Computer Applications (PGDCA) 1 Year

संस्कृत पढ़ें आगे बढ़ें
Learn Sanskrit, Move Ahead

e-mail : jrrsu@yahoo.com • @JRRSU
website : www.jrrsanskrituniversity.ac.in